

5h.

5h.
89
89

239
कपा

परि सं. 4199 - 91

केदावर्णन भूगोश संहिता

पुस्तक

13. अक्षर

(गुरुमुखी लिपि)

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

श्री
२

नेउमेकम् । कुरुवागदभलके । कल्लेमाउचनेदेव । ठविष्टतिभमसयः ॥
केटिदटपगिलिभः । केदरेयः भुभमयेग ॥ भुष्टेउदु । केव । दट
ठिगिडिनिष्ठिउभ ॥ भनंनंउपेडेभे । एय । भुष्टयगवम ॥ भनउदलमं
भेऊं । केदरेमकपायिनभ ॥ कीदरउमकं पीद । भुनल्लभनविष्टउ
केदरंमेवगळ । भिपिवाभ । यिमउल्लभ ॥ गदेमकष्टयेवे । भिपिभ
ऊठयेसूवभ ॥ उभमउवप्रयने । केदरकेइभमयेग ॥ भवपथवि
निमृते । भऊंठयडिभनवः ॥ उदकुठैवेमेव । वृगंमडू । यषाहउः ॥
प्रदसुभनवउद । मिगभउविभागउः ॥ उदप्रहृदमवेमि । केदरं
केइभउमभ ॥ प्रविउंउवनेपष्टे । छिभगिदलप्रमभ ॥ उडिउंभ
चभ । एउंयडू । भेदभिदडूय ॥ उदनीमेवमेमि ॥ किंऊयः नूउमिछ
मि ॥ ॥ उडिमीकुडीमभ । डिउय । केदरभ । दडू । वगदपटलः
मिमीठेनी ॥ ॥ ठगवसुचठमल्ल । लेकनगूदकगक ॥ केदरेउडिभ

होयः

३

कलु। लउउभिन्नभंसयः॥ चपनमेउभिस्तुभि। पटं सुस्तुते ठेयभ॥
यस्तुभमसुते एते के टि ए भ ठेयभे न॥ प्रसीमस्तुउ सुवाडभुमपडाः॥
दिगः २० दं भययः॥ कीमके न भवेग॥ ॥ गधभं एग सीम निवाड नत्रप
हुउ॥ सुभुडकीमके ग॥ ॥ दगिधरभकन॥ ॥ सुकु गीरयभभ
हमंग॥ भउम॥ कलुदिनभिकभे डे॥ सुकु गेव रयलिनि॥ केकके
गभत्रम॥ पचउउरिउः प्रिये॥ यदेव रदभं मे॥ केमके न भवेग॥ ॥
लीनेकु उचउमे सुभके म मभउम॥ नईदिनभिकभे ह॥ सुकु गये उ
निः भउ॥ मभुडी उ ठवउ इलिकनं दिउकभय॥ वाडभुमिरेय॥ भेदि
नीभ सुगिधुउः॥ केमके निदं य॥ सुकु गे रभं ठये॥ भवाडमिरे नभगा
भः प्रविउउउमः॥ वाड के ठं सुभुडमिवः॥ भउगडु, कुल॥ वरं डे म
यदीयं कीमके मयम॥ सुभु पप्रभापं मेव॥ दगिः सुस्तुते ठेय
वभ॥ ॥ वाड गभीरयव मा॥ सुकु यभपगधभ॥ ॥ वरं डः ॥
उभमिभमिरे रस॥ सुस्तुते भे मयलन॥ ॥ गीरविभ कं मेव॥ गभ

वी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

कन्दमिनि
नरयण

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

श्री
३

महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ अलेख्य देवपति ॥ पुनः प्रभु भक्त हृदय ॥ अर्जुन
गच्छेत्तु ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥
नरः ॥ वामकं प्रलपितुं ॥ यशः कलभय प्रयत्न ॥ अष्टः अष्टेयसुभ
सुप्रसन्नकमय प्रमः ॥ केसर महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥
उत्तिष्ठन्ती मर्दिनी यशः कलभय प्रयत्न ॥ अष्टः अष्टेयसुभ
३२५ ॥ ॥ श्रीठैरवी ॥ ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥
नवमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥
उत्तिष्ठन्ती मर्दिनी यशः कलभय प्रयत्न ॥ अष्टः अष्टेयसुभ
वह्निगर्ह मर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥
पिभक्तं यशः कलभय प्रयत्न ॥ अष्टः अष्टेयसुभ
प्रभुभक्तं यशः कलभय प्रयत्न ॥ अष्टः अष्टेयसुभ
मिहृदिगर्ह मर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥
यशः कलभय प्रयत्न ॥ अष्टः अष्टेयसुभ
विद्यमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥ महिषासुरमर्दिनी लम्बा ॥

केदारपात्रे विकारयमयज कुकारयकधिरभ ऊंकारपदुकेयेउं समविबुधपरिपुत्र

म्री
३

यदभ ॥ प्रलयिद्वगवप्रपैरुः ॥ पथैसवैसुगि ॥ ऊंकारउं मयैभुपु
डिलपदेविमेधउः ॥ वभैठिविविपैदुजं ॥ वद्व ॥ यमभयेयउ ॥ केर
नवभविपु ॥ नदिनंभरप्रसिउंभ ॥ मन्त्रिउं पयककुं मयैद्विप
रेउंभ ॥ यदभ ॥ कलुदेउं ॥ गद्व ॥ ममउं गद्व ॥ ७उंभरे ॥ मद्व ॥ उगुडी
उकउंमं पठेउ ॥ उठयेः ॥ मकलंतीजं ॥ ठविपुडिनभंसय ॥ मरुंलद्व ॥ यउ
नद्व ॥ ७उंभरे ॥ यमुठान ॥ विमद्व ॥ यमिभैद्व ॥ उकद्वीजेठउंमिउः ॥
७उंभरे ॥ गद्व ॥ मिमिवमक्ति ॥ मरुपि ॥ ७उंभरे ॥ मिमिवद्व ॥ पठप
पठमकि ॥ ७उंभरे ॥ मवेसुनीयउं ॥ मरुद्व ॥ निमिउ ॥ पठ ॥ मरुमूययउ
मुंम ॥ उउंभरे ॥ मिवविपुः ॥ मविपुने ॥ मययइं निवेमय ॥ ७उं
यमिं विमद्व ॥ उउः ॥ ययद्व ॥ मरुद्व ॥ ७उंभरे ॥ मययइं केपिय ॥
कलंलठेउ ॥ मरुमिद्विभयप्रेति ॥ म्रीभुं ॥ मयिनभंसय ॥ मरुउंकेपि
दद्व ॥ गिडिभैनेउंमपे ॥ मयपउकयउेव ॥ यउेव ॥ पठपउकैः ॥
केरुसुगभमद्व ॥ मरुउं ॥ ययपउकैः ॥ ७उंभरे ॥ पठपउकैः ॥ मयिपय
यकधमिउ ॥ मयकमभिद्वीजं ॥ मरुंनेपुउंमंकल ॥ ७उंभरे ॥ मयिपय

श्री
७

सुखं यो रज्जु म ह्युष ॥ सुखं उभवे मेव तं ॥ सुखं भंडु विठ्ठलिकम ॥
कलमज्जु उयुग मज्जु यट् मनुकम ॥ उभवे च ययन उभवे
कलमज्जु ॥ नरे मजी उभवे मज्जु मज्जु यट् भव भुय उट् ॥ उभवे
वृद्धमष्टम दद्वे ॥ उभवे ॥ सुखं यट् मज्जु उट् ॥ कलमज्जु म दद्वे ॥ सुखं
वरे पिठिं प्रठे ॥ सुखं यट् ॥ सुखं यट् म दद्वे वि ॥ उभवे मज्जु मज्जु
दद्वे ॥ कलमज्जु मज्जु के पट् ॥ देउ मज्जु विमेष ॥ उट् मज्जु उट् मज्जु
मज्जु मज्जु ने प्रिये ॥ एउ मज्जु दि पेट् पेट् ॥ सुखं के मज्जु के दद्वे ॥ प
पट् यट् मज्जु मि उट् मज्जु मज्जु न दद्वे ॥ नृग नृग मज्जु मी पेट् ॥ उट् मज्जु
मज्जु यट् मज्जु ॥ उट् मज्जु मज्जु उट् ॥ सुखं यट् मज्जु मज्जु ॥ उट् मज्जु पिठि
मज्जु मज्जु ॥ पट् मज्जु मज्जु मि मज्जु ॥ एउ मज्जु मज्जु मज्जु ॥ पट् मज्जु मज्जु
पट् यट् ॥ मज्जु मज्जु मि मज्जु ॥ मज्जु मज्जु मज्जु मज्जु ॥ पट् मज्जु मज्जु
लं मज्जु मज्जु मज्जु ॥ मज्जु मज्जु मज्जु मज्जु ॥ मज्जु मज्जु मज्जु मज्जु ॥
मज्जु मज्जु ॥ सुखं यट् मज्जु मज्जु ॥ मज्जु मज्जु मज्जु मज्जु ॥ मज्जु मज्जु मज्जु मज्जु ॥

७

चक्रि
 सपनीय इति न रं द इ भ ऊ ल क य म ॥ गी रु य इ प्र भ जे न ग वि भू
 नु इ य इ ॥ रु क्त उ उ न दे भ व उ डी क वि भ पि न वे उ ॥ भि ण दे वा यु प डी प
 भ रु क्ते न के र उ क ल भ म न य उ डी प ॥ भ व म वि उ भ डु मे ॥ क ल व
 क न क्ते प ॥ ५ ॥ पे ठ गे न भ व रि ॥ उ क्ते प ॥ म ले न रु ॥ ठी मे ठी भ पा
 नू भी ॥ स न ण वि भू रि म म ॥ भू मे भ दि ष ड् पि ल म ॥ स न ण वृ उ उ
 मे वि भ क्त भ क्त द यि भू डि ॥ भो ण दे ॥ उ ठी भ भू क रि भू भ प मे
 प न म ॥ नि रु क्ते ठी भ म म क्ते ॥ ५ ॥ प ॥ ५ ॥ भू उ ॥ भि य ॥ भू उ क्ते मे रि
 उ ॥ भू उ ॥ भू म उ क्ते ह म न य म ॥ व ग ने न भ क्त क्त य पि भि र भ दं मि
 वे ॥ उ न पि दि य डे म हं ॥ रु क्त ने मे ह न ग द ड ॥ भ ये क्त ॥ स उ म
 मे व डे ने व भ व उ ॥ भि रे ॥ ५ ॥ ५ ॥ न म क ह ॥ भ क्ते ले क्त भ व भू
 मि ॥ उ क्ते मे भ दि ष ड् पि ॥ प भू मे भ प दं भि ये ॥ भू ला क्त ॥ भू
 उ उ भ वे न भ क्त भि द द ष ॥ म ड्ते वं भू पं मे ॥ क ल क ह वि वे
 ल न ॥ ५ ॥ क ड्ते भ न भ क्त ॥ ल न उ डि उ व क उ ॥ ५ ॥ क ड्ते मि र भ मे ह

५५

श्री
०-

इमं लीविमं उरुप्रभुवदयाम् ॥ १ ॥ मन्त्रेष्टिं वंती रं वरं मेष्टिं उं वरं ॥ सु
द्वैतमेव मेष्टिं विलग्नमवदति ॥ २ ॥ मन्त्रमपि मेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३ ॥
वर्गमेष्टिं उरुप्रभुमि ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५ ॥
उरुमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ६ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ७ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ८ ॥
॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥
वैष्टिं मेष्टिं मयम् ॥ २१ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ २२ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ २३ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ २४ ॥
मि ॥ २५ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ २६ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ २७ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ २८ ॥
मेष्टिं ॥ २९ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३० ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३१ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३२ ॥
कटि ॥ ३३ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३४ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३५ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३६ ॥
मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३७ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३८ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ३९ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४० ॥
मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४१ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४२ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४३ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४४ ॥
मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४५ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४६ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४७ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४८ ॥
मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ४९ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५० ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५१ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५२ ॥
मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५३ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५४ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५५ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५६ ॥
मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५७ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५८ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ५९ ॥ मन्त्रमेष्टिं विलग्नमवदति ॥ ६० ॥

मरुतविद्वक्त्रे गगनमवडगं कुम्भीमिरभेन धूममे पोरपाउके ॥ मरुगुरीः
 भाऊके ड वरः भेभुभयेचरि ॥ मरुः धूममे ड मेधः ॥ मरुद्वामपदभदिम ॥
 वड्डयेवड रिष्टे ॥ कुम्भीके मरुके दिष्ट ॥ मरुद्वाम विठिरा भयेये पोरम
 द्धएड ॥ ड मरुद्वाममे मरुद्वाम गुरीः ॥ मरुद्वाम भिदिम मरुद्वाम ड ड मेड ॥ कुम्भीम
 वड रिष्टे ॥ मरुमगड मलकु मिय मरुम ड ड ॥ मरुद्वाम गुरीः ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥
 मरुमीमुरि ॥ मरुद्वाम ड ड मेड मेड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥
 मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥
 मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥
 मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥
 मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥
 मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥ मरुद्वाम ड ड मेड ॥

कवः भदिभगदरेमेव ॥ भदपडकनपाः उरुमीनेडमिहमि ॥ केवेविषयेम
 दडपटकेरगवध ॥ कलिकल्पधममम ॥ केवः ॥ पडकडिरेवे
 वडभडागिरेमे ॥ चड्डेडिमवेलिह्वरुपेगिदगिधुः ॥ दमिह्वभमे
 केमिह्वयधमभकम ॥ गदरेडगदएलेपवडभुविमेधः ॥ गदय
 पडपटकभभुडविमेधः ॥ उचुविमभमीननि ॥ केवेविषयेम
 गदडरेविषयेड ॥ भवमभकडपिवक ॥ चड्डेडननेकिह्विह्व
 वरदरेगः ॥ पडपटय ॥ गदयं किंविधीममि ॥ उडिह्व
 गिरेभुं पडभूमीमिमंपम ॥ यधुदवमभरे ॥ गदरेडगदएलेपवडभुविमेधः
 घमरींरमः ॥ मड विषयेडुलेमः ॥ गदरेडगदएलेपवडभुविमेधः
 पडभडडः ॥ गदरेडगदएलेपवडभुविमेधः ॥ गदरेडगदएलेपवडभुविमेधः
 एटंमिह्वयधमभकम ॥ गदरेडगदएलेपवडभुविमेधः ॥ गदरेडगदएलेपवडभुविमेधः

श्री
०९

यमपत्रं भद्रमीयते क्वचन॥ श्रीकैशवकृपेनि उद्वेक्यो
लस्ये॥ ॥ **कैशवः** ॥ ॥ उद्वेक्यो भुवि मेवै दग्धकुडकम् ॥
लज्जयामभभुंउड, कैशवः भगवति॥ सुखं परिहरेवंम दम्
वद्यतिउः किउ॥ कृपं कैशवभस्त्रीकृ, परिपरमविभितः॥ सुखं
कमरनप्रभु उदगी कैशवः कषभ॥ उतिमिनु परं देवै द
रिन्दुभूलाग दउभ॥ भठैदरेभिविषये, रङ्गकृपे कवंमम
कृल्लकैमरकृपेभु, कृल्ल कैशवकृपवन॥ रङ्गकृपाएय
देवै, प्रविडिभिलगइये॥ यमिदरेकृपनिमं, सुखवा
यमभ॥ कैशवेनभयैमेमः॥ भाएउडवनइये॥ परम्वरुम
ल्लेख्य॥ ठीउ नरुमि उयउः॥ भैवगिउयइमया॥ उउठै
॥ रवभेळउः

०९

मधुपारमिडिवमत्र मद्युभमम मधुपुवंभुनपैमि ॥ मधुपुमधुव
 कृपभुणभिवयेमेवभुपिनपरमपः ॥ उक्तुउपंपारमंतेलउगं ॥
 द्रुतः मूतः मरुतः यमिभमः विभमममः यमलुतुवचिंतु
 भिक्तुद्रुतुपः परंवे भुप्रदहिल्लयहमपनेरु परंमरंमरुतुगिभि ॥
 यमलुनमिभमेवेडिभवंनट्टिद्रुतुवपमिनिट्टम ॥ यद्रिभमम
 निभमेवेड्वेड ॥ भुक्तुः मूतः परमंतभपैमि ॥ यद्रिभमेड्येद्रिभु यद्रु
 भिद्रुभमथयेड ॥ मिद्रिभमिडिनिद्रुते ॥ कृपंपरमपैमिउड ॥ यद्रु
 मममउविभुंयमनविडउ ॥ नननविनिद्रुते ॥ परंपरमपै
 भिउड ॥ हउरउनरुडुव ॥ हउरउरुडिवैपनः ॥ प्रदहिल्लनडियभु
 उभयैमिपरंविडुम ॥ प्रकमेपिप्रडिद्रुते ॥ एप्रकमेभुट्टि
 कवप ॥ मडगीणयडिभुग ॥ मधुभयउवेसुग ॥ भवेउरु

CC-0 Sharada Manuscripts at UPSS Lucknow, Digitized by eGangotri

[illegible]

